शिरीष के फूल

प्र0: हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित 'शिरीष के फूल' ललित निबंध की समीक्षा कीजिए।

उ0 'शिरीष के फूल' हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का एक प्रसिद्ध कलात्मक ललित निबंध है। डॉ0 विवेकी राय ने उत्कृष्ट ललित निबंध के विषय में कहा है कि ललित निबंध किस्से कहानी की तरह हल्के-फुल्के ढंग से शुरु होता है, मध्य में रचना गंभीर रूप ले लेती है। बीच में मनोरंजक प्रसंग भी आते हैं और फिर लेखक अचानक पाठकों को किसी विचार या चिंतन के महासमुद्र में पहुँचा देता है। द्विवेदी जी के सभी ललित निबंधों में ये सभी विशेषताएँ पायी जाती हैं।

द्विवेदी जी की मनोरंजक, हल्की-फुल्की और विनोदपूर्ण लगने वाली प्रक्रिया के बीच गंभीरता सर्वत्र दिखायी देती है। बात सामान्य से चलकर चिन्तन की गंभीर ऊंचाइयों तक पहुँच जाती है। पाठक भी कब इस प्रक्रिया में शामिल हो जाता है पता ही नहीं चलता।

'शिरीष के फूल' एक ललित निबंध है जिसमें द्विवेदी जी ने शिरीष के फूल की विशेषताओं के साथ-साथ साहित्यकार, नेता और अनासक्त अवधूतों से जोड़ दिया है। शिरीष के फूल की तुलना ऐसे अनासक्त योगी से की गई है जो ग्रीष्म की भीषण तपन सहकर भी खिला रहता है। शिरीष के विषय में लेखक कहता है कि शिरीष ऐसा वृक्ष है जो छायादार होने के साथ ही अपने फूलों की महक वसन्त के आगमन से भादों तक बिखेरता रहता है। गर्मी में जब अन्य वनस्पतियाँ, फूल समाप्ति के कगार पर होते हैं, तब शिरीष अपने कोमल फूलों को धारण कर जेठ की प्रचण्ड गर्मी को

Scanned with CamScanner

भी सौन्दर्य बिखराते हुए व्यतीत कर देते हैं। शिरीष के वृक्ष और फूलों की विशेषताएँ बताते हुए द्विवेदी जी व्यक्ति विशेष व परिस्थितियों से भी जोड़ देते हैं। द्विवेदी जी का अपने निबंधों के विषय में मत है कि "इसमें मेरा मनुष्य प्रधान है, शास्त्र गौण।" यही कारण है कि इनके निबंध, ललित निबंध स्वच्छन्द दिखाई देते हैं।

द्विवेदी जी कबीर और कालिदास को शिरीष के समान बताते हैं। शिरीष की मस्ती, फक्कड़पन और मादकता उन्हें कबीर और कालिदास में दिखायी देती है। कबीर का फक्कड़पन और कालिदास का सौंदर्यबोध एवं मनोरम कल्पनाएँ शिरीष के समान ही हैं। सुमित्रानन्दन पंत और टैगोर जी को भी वह शिरीष जैसी अनासक्ति से युक्त मानता है। शिरीष कालजयी अवधूत के समान लहलहाता हुआ जीवन की अजेयता का सन्देश रहता है।

शिरीष के फूलों का अत्यन्त कोमल माना गया है कि ये केवल भँवरों के पैरों का बोझ ही सहन कर सकते हैं, पक्षियों का नहीं। फिर भी ये भीषण गर्मी को आसानी से झेल जाते हैं। परन्तु इसके फल बहुत कठोर होते हैं। अगली वसन्त के आने तक गिरते नहीं है। इसके बाद लेखक शिरीष के फल के इस गुण की तुलना नेताओं से करते हुए कहता है कि शिरीष के नए पत्ते और नये फल ही धकेल कर उसी प्रकार से गिरा देते हैं जैसे बूढ़े नेताओं द्वारा कुर्सी खाली न करने पर उन्हें नए नेता पीछे धकेल देते हैं। इस कथन से लेखक यह स्पष्ट करना चाहता है कि मनुष्य को अपनी अवस्था तथा स्थिति के अनुरूप कार्य करना चाहिए।

शिरीष को लेखक ने कालजयी अवधूत कहा है। जब उमस से प्राण उबलता रहता है, एक मात्र शिरीष ~~कालजयी~~

अनासक्त अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता का प्रदर्शन करता दिखता है। जब भीषण गर्मी की चपेट में सब सारी प्रकृति जल जाती रहती है तब यह वृक्ष आठों याम मौज में रहता है। शिरीष की विशेषता यह है कि वह वायुमंडल से अपना रस खींचता है। लेखक कहता है कि 'वायुमंडल के द्वारा खींचे रस से ही यह भयंकर लू के समय इतने कोमल तंतुजाल और ऐसे सुकुमार केसर उगा लेता है। अवधूतों के द्वारा ही संसार की सबसे सरस रचनाएं लिखी गई हैं। कबीर, कालिदास शिरीष के समान ही थे - मस्त, बेपरवाह, मादक। और अनासक्त शिरीष के फूल फक्कड़ाना मस्ती से ही उपज सकते हैं और 'मेघदूत' का काव्य उसी प्रकार के अनासक्त अनुरक्त हृदय में उमड़ सकता है। द्विवेदी जी कहते हैं — "शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है, जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं।"

शिरीष के फूल के माध्यम से लेखक ने प्रेरणा देते हुए कबीर, कालिदास और महात्मा गाँधी का उदाहरण दिया है। जैसे शिरीष विपरीत वातावरण में फक्कड़ता के साथ लहलहाता रहता है वैसे ही कबीर भी विपरीत परिस्थितियों में, फक्कड़पन के साथ समाज को अपनी बातों द्वारा प्रेरणा देते रहे और इतनी सुन्दर सरस रचना कर पाए। कालिदास भी शिरीष की भाँति अनासक्त भाव से सौंदर्य के नये - नये प्रतिमान स्थापित कर गए। आस-पास के संघर्षपूर्ण वातावरण से महात्मा गाँधी ने जीवन रस लेकर सफलता प्राप्त की; विदेशियों से संघर्ष की शक्ति प्राप्त की - जैसे शिरीष प्रचण्ड लू में वायुमण्डल से अपने लिए रस खींच लेता है।

Scanned with CamScanner

स्पष्ट है कि इस ललित निबंध में ललित निबंध की सभी विशेषताएँ विद्यमान हैं। शिरीष की जीवनी शक्ति से प्रभावित लेखक ने उसे कालजयी अवधूत की संज्ञा दी है। शिरीष की फलियों को वात्स्यायन ने कमजोर माना है और उसे झूला डालने के उपयुक्त नहीं माना है। निबंधकार ने शिरीष की इस कोमलता के साथ-साथ शिरीष की जीवटता, विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रहने के गुणों की ओर बार-बार इंगित किया है। शिरीष वृक्ष व फूल को परिचय लेखक हल्के फुल्के ढंग से देता है और फिर आगे इसकी जीवन-शक्ति को बताते हुए उसे समाज, साहित्य आदि से जोड़ कर थोड़ा गंभीर बना देता है। उनका मानना है कि शिरीष जैसे कालजयी अवधूत ही कबीर, कालिदास जैसे महान साहित्यकार बन सकते हैं और महात्मा गाँधी जैसे महान व्यक्तित्व वाले जननायक भी। अंत में निबंध चिन्तन के समुद्र में गोते लगाने को विवश कर देता है।